

प्रमुख अलंकार: एक अध्ययन

बलदेव राम

सह आचार्य, हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, मेड़ता सिटी

अलंकार शब्द 'अलम' और कार दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम' से तात्पर्य है 'शोभा' तथा 'कार' से तात्पर्य है 'करने वाला' अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहलाते हैं। काव्य के सौन्दर्य में अभिवृद्धि करने वाले कारकों को अलंकार नाम से विभूषित किया जाता है। "अलंकरोति इति अलंकारः" अर्थात् जो अलंकृत करे, उसे अलंकार नाम से पुकारा जाता है। अलंकार शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है—आभूषण। जिस प्रकार आभूषण मनुष्य की शोभा में वृद्धि करते हैं उसी प्रकार अलंकार काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं।

आचार्य केशवदास ने काव्य में अलंकारों की महता को निम्नानुसार प्रतिपादित किया है—

जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न बिराजही, कविता वनिता मित्त ॥

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में —“भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी—कभी सहायक होने वाली उक्ति अलंकार है।”

आचार्य दण्डी के अनुसार:—“काव्य शोभा करान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते।” काव्य के शोभा कारक धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकारों से काव्य की शोभा उत्पन्न नहीं होती, केवल बढ़ती है। अलंकारों से काव्य रुचिप्रद और पठनीय बनता है भाषा में गुणवता और प्राणवता बढ़ती है।

अलंकार के तीन भेद माने जाते हैं—

01. शब्दालंकार

02. अर्थालंकार

03. उभयालंकार

01. **शब्दालंकार:**— जब अलंकार का चमत्कार शब्द में निहित होता है तो वहाँ शब्दालंकार होता है। यदि शब्द के स्थान पर शब्द का पर्याय रख दिया जाता है तब चमत्कार खत्म हो जाता है। अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश, वीप्सा आदि।

02. **अर्थालंकार:**—जब अलंकार का चमत्कार उसके शब्द के स्थान पर अर्थ में विद्यमान रहता है तो वहाँ अर्थालंकार होता है। यहाँ पर्यायवाची शब्द रखने पर भी चमत्कार उपस्थित रहता है।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, विरोधाभास, प्रतीप, व्यतिरेक, विभावना, दृष्टान्त, भ्रांतिमान आदि।

03. **उभयालंकार**:- जहाँ अलंकार का चमत्कार उसके शब्द और अर्थ दोनों में पाया जाए तो वहाँ उभयालंकार होता है। श्लेष अलंकार उभयालंकार की श्रेणी में आता है। शब्द के आधार पर शब्द श्लेष तथा अर्थ के आधार पर अर्थ श्लेष।

01. **अनुप्रास**:- काव्य में जब एक वर्ण से प्रारम्भ होने वाले शब्दों की रस के अनुकूल दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

गंधी गंध गुलाब को, गंवई गाहक कौन?
 X X X X X
 चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल-थल में।
 X X X X X

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
 लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।
 उपर्युक्त उदाहरणों में क्रमशः ग, च व ल वर्ण से प्रारम्भ होने वाले शब्दों की पुनरावृत्ति हुई है।

02. **यमक** :- काव्य में जब कोई शब्द दो या दो से अधिक बार आये तथा प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

सजना है मुझे सजना के लिए।
 पहले सजना का अर्थ है- श्रंगार करना और दूसरे का अर्थ है-नायक(पति)।
 कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
 या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।।
 पहले कनक का अर्थ है-धतूरा और दूसरे का अर्थ है-सोना।।

गुनी गुनी सब के कहे, निगुनी गुनी न होत।
 सुन्यौ कहूँ तरु अरक तें, अरक समानु उदोत।।
 पहले अरक का अर्थ-आक (पेड़) और दूसरे का अर्थ-सूर्य।।

03. **श्लेष** :- जब काव्य में प्रयुक्त किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

‘सुबरण को ढूँढत फिरत, कवि व्यभिचारी और चोर।’
 यहाँ सुबरण में श्लेष है। कवि के सन्दर्भ में इसका अर्थ सुवर्ण(अक्षर), व्यभिचारी के सन्दर्भ में सुन्दर रूप तथा चोर के सन्दर्भ में सोना है।

पानी गये न उबरे, मोती मानुष चून।
यहाँ पानी शब्द का मोती के सन्दर्भ में अर्थ है चमक, मानुष के सन्दर्भ में इज्जत और चून (आटा) के सन्दर्भ में जल है।

04. **वक्रोक्ति** :- जहाँ वक्ता के कथन का श्रोता जान-बूझकर श्लेष या काकु के द्वारा दूसरा अर्थ लगाता है। इसके दो प्रकार से स्वीकार किया जाता है— श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

(I) श्लेष वक्रोक्ति :- ‘को तुम हौ इत आये कहाँ धनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो।’

(II) काकु वक्रोक्ति:- ‘मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुमहिं उचित तप मो कहूँ भोगू।’

05. **उपमा** :- जहाँ गुण, धर्म या क्रिया के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

‘हरिपद कोमल कमल से।’

हरिपद (उपमेय) की तुलना कमल (उपमान) से कोमलता के कारण की गई है।

उपमा के अंग 01. उपमेय—जिसकी तुलना की जाए।

02. उपमान—जिससे तुलना की जाए।

03. वाचक शब्द—जिन शब्दों के द्वारा उपमेय और उपमान को समान धर्म के साथ जोड़ा जाता है।

04. समान धर्म—जिस समान गुण के कारण तुलना की जाए।

भेद:- 01. पूर्णोपमा—जहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग वर्णित हो।

02. लुप्तोपमा—जब चारों अंगों में से कोई एक या एकाधिक अंग लुप्त हो।

03. मालोपमा—जब किसी एक ही उपमेय की तुलना एकाधिक उपमानों से की जाए।

उदाहरण —1. मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।

2. पीपर पात सरिस मन डोला।

06. **रूपक:-** जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है अर्थात् उपमेय और उपमान दोनों को एक रूप मान लिया जाता है वहाँ रूपक अलंकार होता है। विश्लेषण पर दोनों के बीच ‘रूपी’ वाचक शब्द होता है।

बीती विभावरी जागरी

अम्बर पनघट में डुबो रही

तारा घट उषा नागरी

यथा ‘अम्बर—पनघट’, ‘तारा—घट’ एवं ‘उषा—नागरी’।

01. अम्बर रूपी पनघट।

02. तारा रूपी घट।

03. उषा रूपी नागरी।

उदित उदय गिरी मंच पर रघुवर बाल पतंग।

बिकसे संत—सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

इसमें गिरि को मंच, राम पर बाल सूर्य का, संतो पर कमल का तथा संतो की आँखों को भँवरे का रूप आरोपित किया गया है।

07. **उत्प्रेक्षा:**— उपमेय में उपमान की बलपूर्वक कल्पना या सम्भावना व्यक्त की जाती है, तब वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

यहाँ सम्भावना अभिव्यक्ति हेतु जनु, मनु, मानो, जानो, निश्चय, प्रायः बहुधा, इव, खलु आदि शब्द—प्रयुक्त होते हैं।

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
झुके कूल सो जल परसन हित मनहु भाए॥

सोहत औढ़े पीतपट, स्याम सलोने गात।
मनहुँ नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात॥

लता भवन ते प्रगट भे, तेहि अवसर दोउ भाई।
निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल विलगाई॥

08. **उदाहरण:**— इसमें पहले एक साधारण बात कही जाती है और उसके बाद उससे मिलती-जुलती दूसरी बात के माध्यम से अर्थ को स्पष्ट किया जाता है। इस अलंकार का अर्थ होता है— दृष्टांत या मिसाल के द्वारा बात को समझाना।
ज्यों, जिमि, जैसे, यथा आदि वाचक शब्द समानता दर्शाने हेतु उपस्थित रहते हैं।

उँचे कुल का जनमिया, जे करनी उँच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सौय॥

नीकी पै फीकी लगै, बिनु अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, नहिं श्रंगार सुहात॥

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान।
ज्यों तपि—तपि मध्याहन लौ, अस्त होत है भान॥

09. **विभावना** :— जहाँ कारण के बिना ही कार्य होता दिखता है वहाँ विभावना अलंकार होता है
निन्दक नियरै राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिन, निर्मल करे सुभाय॥
यहाँ बिना पानी व साबुन के स्वभाव को निर्मल करने की बात कही गई है।
बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म, करें विधि नाना।
यहाँ बिना पैरों के चलने, बिना कानों के सुनने, बिना हाथों काम करने की बात प्रस्तुत है।

10. **विरोधाभासः**—वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। वाक्य में दो विरोधी बातें एक साथ कही जाती हैं लेकिन आशय निकालने पर वह विरोधाभास दूर हो जाता है और एक गहरा अर्थ निकलता है।

या अनुरागी चित की गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों—ज्यों बूड़ै स्याम रंग त्यों—त्यों उज्जवल होय॥

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ।
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ॥

11. **भ्रांतिमानः**— उपमेय में उपमान की भ्रांति होने से और उसके अनुरूप क्रिया होने से भ्रांतिमान अलंकार होता है।

‘ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान।’
यहाँ हंसिनी ओस बूंदों को मोती समझ कर चुग रही है।

नाक का मोती अधर की कांति से,
बीज दाढ़िम का समझकर भ्रांति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है।
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?
यहाँ नाक में तोते का और दंत पंक्ति में अनार के दाने का भ्रम हुआ है।

परत भ्रमर सुक तुंड पर,
भ्रम धरि कुसुम पलास।
धरि चाको पकरन चाहत
जम्बूफल की आस।

यहाँ भ्रमर शुक तुंड को पलास का लाल फूल और शुक भ्रमर को काला जामून समझ कर पकड़ना चाहता है।

12. **सन्देहः**—इसमें अंत तक संशय बना रहता है दूर नहीं होता जहाँ उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में सन्देह बना रहे और निश्चय न हो सके, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी की ही सारी है॥
दुःशासन को साड़ी में नारी का और नारी में साड़ी का भ्रम हो गया।

कोई पुरन्दर की किंकरी है,
या किसी सुर की सुन्दरी है॥

कि,किधौं,क्या,या,अथवा जैसे शब्दों को प्रयोग होता है जो अनिश्चयात्मक स्थिति को दिखाते हैं।

13. **असंगति:**— कारण और कार्य में संगति न होने पर असंगति अलंकार होता है। जहाँ कारण हो, कार्य वहाँ न होकर किसी अन्य स्थान पर होता है।

‘हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै॥’

यहाँ घाव तो लक्ष्मण के हृदय में है, पर पीड़ा राम को है।

तुमने पैरों में लगाई मेंहदी,

मेरी आँखों में समाई मेंहदी॥

मेंहदी पैरों में लगती है, पर उसका प्रभाव आँखों में दिखता है।

दोनों में असंगति अलंकार है।

14. **दृष्टांत:**— जहाँ उपमेय, उपमान और साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता है, वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है। इसमें एक ही भाव को स्पष्ट करने के लिए दो अलग-अलग बातें कही जाती हैं इसमें पहली पंक्ति की बात को सिद्ध करने के लिए दूसरी पंक्ति में उदाहरण दिया जाता है।

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत जात तैं, सिल पर परत निसान॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

बसे बुराई जासु तन, ताही को सन्मान।

भलो भलो कहि छोड़ि, छोटे ग्रह जपदान॥

15. **प्रतीप** :- प्रतीप का अर्थ है उल्टा या विपरीत। यह उपमा अलंकार के विपरीत होता है क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित, पराजित या हीन दिखाकर उपमेय की श्रेष्ठता बताई जाती है।

“सिय मुख समता किमि करै चन्द वापुरो रंक।”

सीताजी के मुख (उपमेय) की तुलना बेचारा चन्द्रमा (उपमान) नहीं कर सकता। उपमेय की श्रेष्ठता प्रतिपादित होने से यहाँ प्रतीप अलंकार है।

“उस तपस्वी से लम्बे थे, देवदार दो-चार खड़े।”

यहाँ देवदार के वृक्षों (उपमेय) को तपस्वी (उपमान) से अधिक लम्बा बताया गया है जो सामान्य उपमा के विपरीत है। (अक्षरतः तपस्वी की उपमा वृक्षों से दी जाती है न कि वृक्षों की तपस्वी से)।

सन्दर्भ सूची :-

01. अलंकार—छंद पारिजात —प्रो.रमेश चन्द्रा डॉ.हेमलता ।
02. हिन्दी व्याकरण—कामता प्रसाद गुरु ।
03. अलंकार विमर्श—डॉ.रामचन्द्र तिवारी ।
04. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना—डॉ.वासुदेव नन्दन प्रसाद ।
05. अलंकार पारिजात—नरोत्तम दास स्वामी ।
06. अलंकार—विकिपीडिया ।
07. भारतीय काव्यशास्त्र—डॉ.सत्यदेव चौधरी ।
08. अलंकार मीमांसा—डॉ.नगेन्द्र ।
09. रस छंद अलंकार—रमाशंकर शुक्ल ‘रसाल’ ।
10. हिन्दी व्याकरण एवं रचना —प्रबोध—राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल,जयपुर ।
11. भारतीय काव्यशास्त्र:योगेन्द्र प्रताप सिंह —लेक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद
12. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान:—प्रो.हरिमोहन,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली ।
13. भारतीय साहित्य और काव्यालंकार—डॉ.भोलाशंकर व्यास,चौखम्भा प्रकाशन,वाराणसी ।
14. काव्यांग विवेचन—डॉ.भगीरथ मिश्र एवं डॉ.बलभद्र तिवारी,स्मृति प्रकाशन,इलाहाबाद
15. भारतीय काव्यशास्त्र—डॉ.तारक नाथ,बाली वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली ।